दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर।
मन वाचा करम बांध के, दूजा ऐसा कर न सके जहूर।। ३० ।।

दया और अंकूर की करनी का तेज छिपा नहीं रहेगा। मन, वचन और कर्म से ब्रह्मसृष्टि के बिना और कोई ऐसा प्रकाश नहीं कर सकेगा।

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे न अमल।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यहां हमारे सुन्दरसाथ में तीनों प्रकार की सृष्टि शामिल है। इसलिए तीनों के वास्ते करनी, कृपा और अंकूर की हकीकत बताई। अब तीनों की रहनी छिपी नहीं रहेगी।

॥ प्रकरण ॥ ७९ ॥ चौपाई ॥ १०९८ ॥

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम।
प्रेमै में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम।
सखी री धाम जईए।। १ ॥ टेक ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरी इस वाणी के मीठे वचनों के बोलने से तुम्हारा सब काम हो गया। धाम का दरवाजा खुल गया है। अब प्रेम में मग्न होकर घर चलो।

दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर।
फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर।। २ ॥

आखिरत का समय आ गया है। जो दौड़ सके वह दौड़कर आ जाए। जो कुरान में आखिरत का समय कहा था, वह आ गया है।

बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम।। ३ ॥

परमधाम का जो वर्णन धनी करते थे उसी परमधाम में अपनी सुरता लगाओ और सुन्दरसाथ की सेवा करो। यही अपना काम है।

बन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कई ठाम।
पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम।। ४ ॥

परमधाम के वनों को खासकर अपने चितवन से देखो। जहां खेलने के कई ठिकाने हैं, जहां पशु पक्षी खेलते हैं, सुन्दर बोली बोलते हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं?

स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास।
मन के मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास।। ५ ॥

श्याम श्यामाजी के सुन्दर स्वरूप को मन में उमंग भर के देखो। अपने मन की चाहना पूर्ण करने के लिए अपने धनी से आनन्द विलास करो।

इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध।। ६ ॥

धनी का इश्क आया है जो अपने प्रेम स्नेह की सुध देता है। जागृत बुद्धि आई है। उससे परमधाम की तरह-तरह के आनन्द की लीला को देखो।

Nijanand App

आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर।
हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर।।७ ।।

अखण्ड घर का आनन्द आ गया। इसे बड़ी उमंग से ग्रहण करो। हंसते-खेलते चलो और अपने घर को देखो।

सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें।
निपट आयो निकट, जो आंखां खोल के देखे।।८ ।।

अपने अखण्ड घर के सुख तो बेशुमार हैं। विचार कर देखो (आंखें खोलकर देखो), उनके प्राप्त करने का समय आ गया है।

अंग अनुभवी असल के, सुखकारी सनेह।
अरस परस सबमें भया, कछु प्रेमें पलटी देह।।९ ।।

अपने परआतम के अंगों के सच्चे सुख और प्यार अनुभव में आने लगे हैं जिससे आत्मा को परआतम से अरस परस (परस्पर) सुख मिलने लगे और यह तन प्रेम में बदल गया (मग्न हो गया)।

मंगल गाइए दुलहे के, आयो समें स्यामा वर स्याम।
नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम।।१० ।।

अब अपने श्यामा, श्याम को देखकर मंगल गीत गाइए और अपने दूल्हा को प्यार भरी नजरों से देखकर आनन्द लीजिए।

धाम के मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कई बिध।
अंदर आंखें खोलिए, आई है निज निध।।११ ।।

परमधाम के महलों में सब तरह के सुख की सामग्री है। अन्दर की आंखें खोलकर देखो। अब अपनी न्यामत (अखण्ड निधि) आ गई है।

विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार।
अनुभव अंगे आइया, याद आए आधार।।१२ ।।

इस तरह धनी के आनन्द की विशेष तरह से लेने की इच्छा हुई। धनी की याद आने से परमधाम के अनुभव अंग में आने लगे (सुख मिलने लगे)।

दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथे आए विदेसी।
घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी।।१३ ।।

विरह के दुःख में भीगी ब्रह्मसृष्टियां धाम-धनी के सामने ऐसी पहुंचीं मानो कोई बहुत दूर विदेश से आया हो, जबकि एक क्षण में ही खेल देखकर घर में उठ बैठेंगी। ऐसा यह खेल दिखाया।

उठ के नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार।
साथ सनमंधी मिल के, खेलिए संग भरतार।।१४ ।।

अब उठकर चलो, जमुनाजी नहाने चलें। वहां जाकर सिनगार करें तथा सब सुन्दरसाथ मिलकर धनी के साथ खेलें।

Nijanand App

महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम अब मुस्कराती हुई मस्ती में मिलकर घर आओ और अपने मूल तन परआतम में जागृत होकर तरह-तरह से विलास के आनन्द लो।

।। प्रकरण ।। ८० ।। चौपाई ।। १११३ ।।

राग मारू

सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएं किए अलेखे।। टेक ।।
क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए।
अरस-परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएं दई छुटकाए।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! धनी की मेहर (कृपा) देखो जो मेरे ऊपर बेशुमार कर रहे हैं। यह माया हमको नहीं छोड़ती और हमसे भी माया नहीं छोड़ी जाती। यह माया जो हमको बज्रलेप की तरह लिपट गई थी, उसे मेरे धनी ने छुड़ा दिया।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।। २ ।।

शुरू से आज दिन तक इस माया से कोई इसे छोड़कर निकल नहीं सका। अब धनी ने हमको ऐसी शक्ति दी कि हमने चौदह लोकों को भी माया से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया।

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई।। ३ ।।

धनी ने हमें ऐसी शोभा दी जो आज दिन तक किसी को नहीं मिली और न मिलेगी। हमारे जीव के योगमाया वाले तन जो पहली बहिश्त में होंगे, अब सभी उन्हें पूजेंगे।

धनिएं भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे।। ४ ।।

धनी ने हमें तारतम वाणी की कुंजी देकर चौदह तबकों को बहिश्तों में अखण्ड कराया और अब यह चौदह तबकों के जीव, हमारे तन जो योगमाया में पहली बहिश्त में अखण्ड होंगे, उनकी सेवा करेंगे।

ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन।
फेर कहे इन पिउ पेहेचाने, याही में आकीन।। ५ ।।

हमको इतनी बड़ी साहेबी देकर त्रिगुण के अधीन कर दिया और फिर यह भी कह दिया कि ब्रह्मसृष्टि को ही धनी की पहचान है और इनको ही पारब्रह्म पर भरोसा है।

चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया।
सोभा अलेखें कहूं मैं केती, ऐसा धनिएं हमसों किया।। ६ ।।

चौदह लोकों को भी पारब्रह्म पर यकीन दिया। वह भी कहते हैं कि यह ब्रहासृष्टि के बल से हुआ है, अर्थात् करते खुद हैं और शोभा हमें दिलवाते हैं। मैं इस शोभा की क्या कहूं? बेशुमार है। धनी ने हमको शोभा दी है। ऐसा हमारे साथ धनी कर रहे हैं।

Nijanand App